पैब्लो पिकासो

इबी लेप्स्की, चित्र : पाओलो कार्डोनी

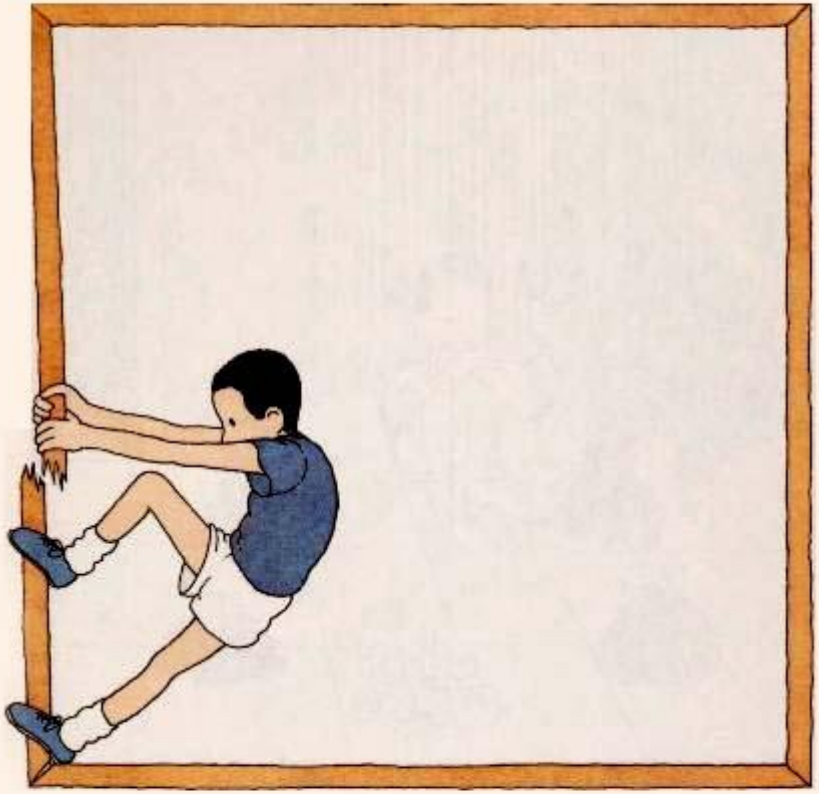

पल्बितो एक छोटा लड़का था जो बड़ा मूडी था. उसका मिजाज मौसम की तरह अचानक बदल जाता था. कभी-कभी वो धूप की तरह हंसमुख और प्यारा होता. पर कई बार उसका स्वभाव बुरा और गुस्सैल होता था. उसकी माँ उससे बहुत प्यार करती थीं, लेकिन वो अपने बेटे को समझती नहीं थीं.

एक बात जो उन्हें बिल्कुल समझ में नहीं आती थी वो थी चीजों के बारे में पल्बितो की भावना. पल्बितो बड़ी सावधानी से सूखी पत्तियां, समुद्र की सीपियां, कंकड़, आड़ू के गुठलियां, और चेरी के डंठल जैसी चीज़ें एकत्र करता था. लेकिन वो उन सभी अद्भुत और महंगे खिलौनों को पूरी तरह नजरअंदाज करता था जो उसे बड़े प्रेम से दिए जाते थे.

एक दिन एक समुद्री सीप पल्बितो से गिरकर टूट गई. दुखी होकर पल्बितो ने भयानक रूप से गुस्सा किया.

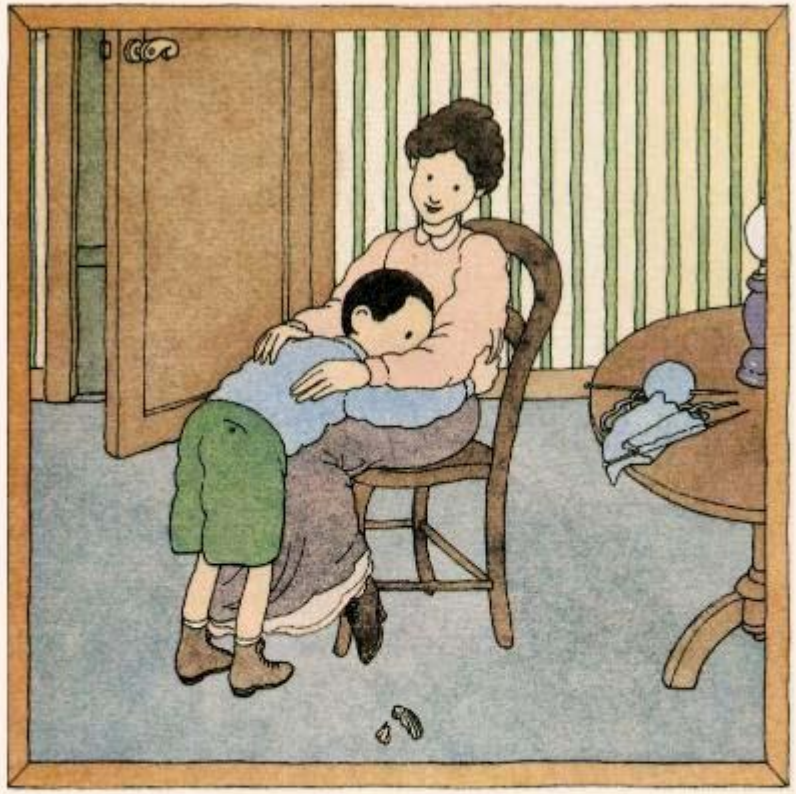

"तुम्हारे पास अनेकों सीपियां हैं जो बिल्कुल टूटी हुई सीपी जैसी ही हैं," माँ ने यह कहकर उसे सांत्वना दिलाने की कोशिश की.

लेकिन पल्बितो को उससे कोई आराम नहीं मिला. उसने खोज निकाला था कि जो चीजें एकदम समान दिखती हैं, वास्तव में उनमें छोटे-छोटे अंतर होते हैं. एक समुद्री सीपी हमेशा दूसरी सीपी से अलग होती है. एक पत्ता, हमेशा हर दूसरे पत्ते से अलग होता है. एक आड़ू की गुठली किसी भी अन्य आड़ू की गुठली जैसी नहीं होती है.

युवा पल्बितो ने यह पता लगाया कि प्रकृति कभी भी खुद को दोहराती नहीं है. लेकिन यह कहने का उसका मन नहीं करा. उसने इस बात को अपने अंदर ही रखा, पर बाहर से वो रोता और चिल्लाता ही रहा.

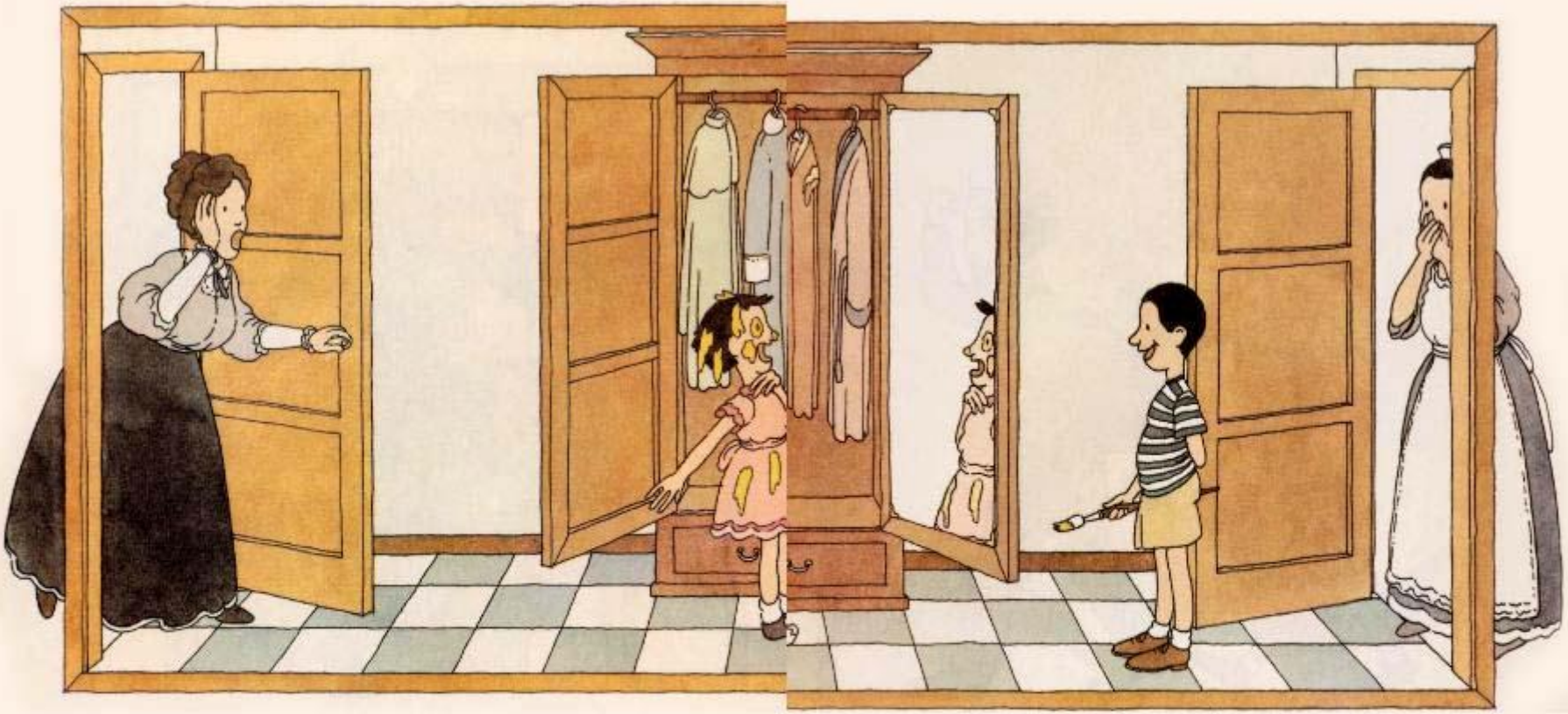

लेकिन एक रविवार की सुबह, जब माँ उसे चर्च जाने के लिए तैयार कर रही थीं तो पल्बितो ने कुछ भयानक किया.

उसने अपनी छोटी बहन को एक अंडे की जर्दी से पेन्ट किया, जिससे वो एक अजीब सी जोकर दिखने लगी. उसने अपनी बहन के गालों पर दो बड़े गोल पीले धब्बे, और आँखों के चारों ओर दो पीले घेरे और नाक पर एक पीला धब्बा बनाया. उसने बहन के बालों पर अंडे की जर्दी से लकीरें बनाईं और उसके सुन्दर गुलाबी रंग के फ्रॉक पर भी अंडे की जर्दी से धारियां बनायीं.

शुरुआत में तो बहन को वो सब एक खेल लगा. लेकिन जब बहन ने खुद को आईने में देखा तो उसे अपना चेहरा एक राक्षस जैसा दिखाई दिया. उसकी सुन्दर पोशाक भी बर्बाद हो गई थी. फिर वो फूट-फूट कर रो पड़ी.

माँ को जैसे ही इस बात का पता चला तब उन्होंने भी रोना शुरू कर दिया. वो एक सुन्दर लेस वाले रूमाल में सुबक-सुबक कर रोईं और उन्होंने कहा, "अब बहुत हो गया! पल्बितो अब तुम्हारे पिता तुम्हें ठिकाने लगाएंगे!"

बाद में पल्बितो अपने कमरे में गया. वहां जाकर उसने अपने खिलौनों को जमकर पीटना शुरू किया. माँ को कुछ समझ में नहीं आया. पल्बितो अपने खिलौनों को नष्ट क्यों करना चाह रहा था? लेकिन वास्तव में पल्बितो कुछ भी नष्ट करना नहीं चाहता था. वो केवल उन खिलौनों की रोजमर्रा की वास्तविकता को किसी अन्य चीज़ में बदलना चाहता था.

पल्बितो की कल्पना में, उसकी गाड़ी (वैगन) के पहिए बड़ी बिल्ली की दो आंखें थीं; उसकी तिपहिया साइकिल का हैंडल - बैल के सींग थे. अगर केवल वो उन्हें हटाकर अपने खिलौने वाले घोड़े के सिर पर रख सकता - तो फिर क्या वो एक नया दिलचस्प प्राणी बना पाता!

पल्बितो की माँ अपने बेटे को बिल्कुल नहीं समझती थीं. असल में पल्बितो को कोई भी नहीं समझता था.

नौकरानी को यह समझ में नहीं आया कि पल्बितो ने टमाटर की चटनी में अपनी उंगलियां डुबाकर रसोई की दीवार पर अजीब तरह के नमूने क्यों बनाए? जैसे उतना काफी नहीं था, पल्बितो ने लकड़ी के कोयले का टुकड़ा लिया और उससे एक नई धुली चादर के ऊपर खूब चीता-पोती की. नौकरानी को तब बहुत गुस्सा आया जब सब कुछ धोने और साफ करने के लिए उसे ओवरटाइम काम करना पड़ा.

फिर, दो दिन बाद पल्बितो की मां ने पाया उसने एक और अजीब काम किया. उसने कमरे की एक दीवार को कील से खरोंच-खरोंच कर बर्बाद कर दिया. अपनी करतूत को छिपाने के लिए उसने दीवार के सामने सोफा लगा दिया था.

माँ सोच रही थीं कि क्या वो इसके बारे में पल्बितो के पिता से शिकायत करें. फिर उन्होंने नहीं बताने का फैसला किया. जब पिताजी घर आते तो वो शांति चाहते थे. वो आराम करना चाहते थे और शरारती बच्चों और नौकरानियों के बारे में कहानियाँ नहीं सुनना चाहते थे. पल्बितो के पिता असल में, अपना सारा खाली समय पेंटिंग करते हुए बिताते थे. वो पेंट और ब्रश के साथ कैनवस पर लगातार पेन्ट ही करते रहते थे.

घर में शांति के लिए, माँ ने पल्बितो को छोटे बच्चों की बालवाड़ी में भेजने का फैसला किया. माँ को लगा कि उससे पल्बितो को कुछ ज़रूर मदद मिलेगी. उन्होंने सोचा, कि पल्बितो किंडरगार्टन में जाकर कुछ शांत हो जाएगा. शायद वो अन्य बच्चों के साथ खेले और कुछ बालगीत गाना भी सीखे.

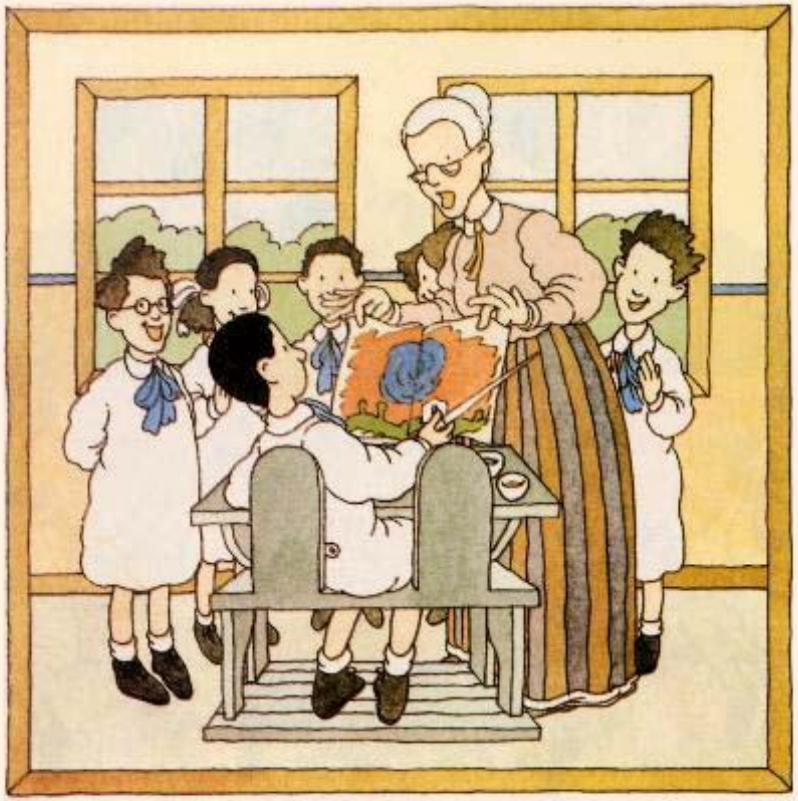

लेकिन पल्बितो बालवाड़ी में अन्य बच्चों के साथ खेलना, बालगीत सीखना या गाना नहीं चाहता था. वो शिक्षक द्वारा सुझाए अच्छे छोटे फूल भी नहीं बनाना चाहता था. उसकी बजाए पल्बितो ने एक चमकदार लाल आकाश के बीच में एक बड़ा सूरज बनाया.

"पल्बितो! आकाश लाल नहीं होता है! वो नीला होता है! और वो बात हर कोई जानता है!" टीचर ने बाकी सभी बच्चों के सामने पल्बितो को डांटा. और फिर बच्चे उस पर हंसे.

उस दिन से पल्बितो की किंडरगार्टन जाने में कोई रूचि नहीं बची.

"इस बच्चे का क्या होगा?" पल्बितो की माँ ने आह भरते हुए पूछा. "वो एक विद्रोही है! और अपने इरादों का बहुत पक्का है! शायद वो बड़ा होकर एक सैनिक बने. अगर वो फौज में जाएगा तो मुझे यकीन है कि वो ज़रूर एक जनरल बनेगा!"

"हो सकता है कि वो सुधरे और बदले," नौकरानी ने अपनी उम्मीद ज़ाहिर की. (उसने सिर्फ संतों के जीवन के बारे में पढ़ा था.) "फिर शायद सुधरने के बाद वो एक पुजारी बने, और फिर एक दिन वो पोप भी बने!"

फिर पल्बितो के पिता को बुलाया गया और उन्हें उसकी सारी हरकतों के बारे में बताया गया. पल्बितो ने क्या-क्या किया वो सब सुनने के बाद पिताजी का हंसने को मन करा. लेकिन अपनी पत्नी और बेटी के आंसुओं को देखकर उन्होंने अपनी हंसी रोकी.

उसके बजाए, उन्होंने पत्नी से कहा. "ज़रा मुझे मेरी टोपी दो और पल्बितो की भी. हम दोनों टहलने जाएंगे. फिर मैं यह समझने की कोशिश करूंगा कि पल्बितो इस तरह से क्यों व्यवहार करता है."

वे समुद्र के किनारे गए. कुछ समय बाद पल्बितो के पिता समुद्र तट की रेत पर लेट गए और वहीं सो गए. पल्बितो ने तुरंत अपने जूते उतारे और रेत पर नंगे पांव दौड़ा. वो बीच-बीच में रुककर कोई सुन्दर शंख और सीपी इकट्ठी करता रहा.

जब पल्बितो के पिता जागे तो उन्हें गीली रेत पर अपने सामने कुछ ऐसा देखा, जिसे देख वो एकदम दंग रह गए. किसी ने सिर्फ एक रेखा से रेत में डॉल्फिन का एक बेहद सुन्दर चित्र उकेरा था.

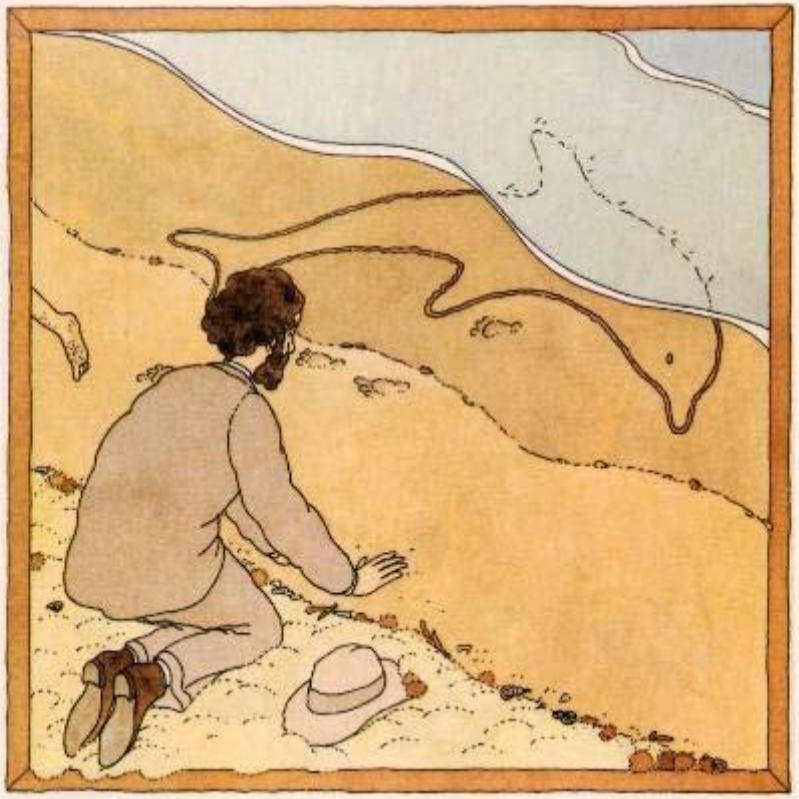

पल्बितो के पिता ने अपनी आँखें मलीं और बेहतर देखने के लिए उठे. लेकिन तभी एक लहर आई और उसने डॉल्फिन के चित्र को धो डाला. पल्बितो उनके सामने से दौड़ा लेकिन उसने एक शब्द भी नहीं कहा.

घर लौटने पर भी पल्बितो के पिता डॉल्फिन की उस अद्भुत ड्राइंग को भूल नहीं पाए. क्या उन्होंने कोई सपना देखा था? अगर नहीं तो वो अद्भुत डॉल्फिन किसने खींची थी? पल्बितो? या किसी अन्य व्यक्ति ने जो उनके सोते समय वहां से गुजरा था?

घर पहुंचते ही पल्बितो के पिता ने यह देखना चाहा कि उनके बेटे ने लिविंग रूम की दीवार पर क्या खरोंचा था. उन्होंने सोफे को सरकाया. उन्होंने जो कुछ देखा उसे देखकर वो अचरज में पड़ गए. वो प्रागैतिहासिक मानव की ड्राइंग जैसी लग रही थी. उसमें घोड़ों पर तीरों से लैस शिकारी थे जो दौड़ते हुए हिरणों और बाइसन का शिकार कर रहे थे.

फिर पिता, पल्बितो को अपने स्टूडियो में ले गए. उन्होंने पेंटिंग बोर्ड पर एक सफेद कैनवास लगाया, और फिर पल्बितो को ब्रश और रंगों का पैलेट दिया, और उससे पेंट करने को कहा.

पल्बितो ने सबसे पहले, अपनी बहन का चित्र बनाया. उसने बहन का अद्भुत चित्र बनाया - जिसमें उसके बालों में गुलाबी रिबन थे और वो चर्च जाने के लिए रविवार की सुन्दर पोशाक पहने थी. जाहिर था वो अंडे की ज़र्दी पेन्टिंग वाले प्रकरण के लिए माफ़ी चाहता था.

फिर उसने पेड़, लैंडस्केप और घोड़ों के चित्र बनाए. उसने नींबू, कबूतर, फूलदान और चंद्रमा के चित्र भी बनाए.

पल्बितो के चित्रों को देखकर पिता चकित रह गए. फिर उन्हें समझ में आया कि पल्बितो में ड्राइंग और पेंटिंग की एक असाधारण प्रतिभा थी.

फिर बड़े प्यार से पिता ने पल्बितो को, अपने सारे ब्रश, पेंट का बक्सा, चित्रफलक, पैलेट, कैनवस, कागज के बड़े-बड़े रोल, स्केचिंग चारकोल, पेंसिल, स्केचबुक आदि भेंट कर दी. उस दिन से पिताजी ने ड्राइंग और पेंटिंग करना छोड़ दिया. अब वो अपने बेटे की महान प्रतिभा को निहारने और उसकी प्रशंसा करने से ही खुश थे.

जब पल्बितो बड़ा हुआ, तो उसने दुनिया को एक विशेष, कल्पनाशील तरीके से देखना जारी रखा. और उसने अपने शानदार और रोमांचक चित्रों में जो कुछ बनाया उसे उसने दुनिया के साथ साझा किया. आज दुनिया पल्बितो को, **पैब्लो पिकासो** के रूप में जानती है जो आधुनिक काल के सबसे महान और सबसे मूल कलाकारों में से एक थे.

अंत